नई वाचा का संगति भोज

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार अध्ययन नोट्स

लूका 22:1 अब अखमीरी रोटी का पर्व, जो **फसह** कहलाता है, आ रहा था।

इस्राएल के लिए **फसह के पर्व का भोज** एक वार्षिक उत्सव था ताकि वे याद रखें कि जब परमेश्वर ने मिस्र से उन्हें छुड़ाया था, तब उसने किस प्रकार उनके साथ **लहू की वाचा** बान्धी थी।

पद 15 और उसने उनसे कहा, "अपने दु:ख उठाने से पूर्व **मेरी बड़ी अभिलाषा था कि मैं तुम्हारे साथ फसह खाऊँ** (हृदय जागृत करना)

- क्यों? यीशु को अपने शिष्यों के साथ फसह खाने की बड़ी लालसा क्यों थी?
- फसह के भोज में ऐसा क्या था कि वह उसके लिए इतना महत्वपूर्ण था ?

सर्वप्रथम – यीशु जानता था कि वही फसह का मेमना था।

तब अख़मीरी रोटी के पर्व का वह दिन आया जिसमें **फसह का मेमना बलि करना पड़ता था।**

लूका 22:7

पुराने नियम का **फसह का पर्व** परमेश्वर के सच्चे मेमने यीशु मसीह का **उदाहरण और एक प्रकार** है।

- **अब्राहम के द्वारा भविष्यवाणी :** उत्पत्ति 22 : अब्राहम ने कहा, "हे मेरे पुत्र, **परमेश्वर** होमबलि की **भेड़ का उपाय** आप ही करेगा।"
- यशायाह द्वारा **भविष्यद्वाणी** : (53:7) वह सताया गया और उसे दु:ख दिया गया, फिर भी उसने अपना मुंह न खोला। जैसे **मेमना** वध होने के समय तथा भेड़ अपना ऊन कतरनेवाले के सामने शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा **परिचय** (यूहन्ना 1:29) देखो, **परमेश्वर का मेमना** जो जगत का पाप उठा ले जाता है।
- पतरस द्वारा **समझाया गया** : 1 पतरस 1:18–19 क्योंकि तुम जानते हो कि उस निकम्मे चाल-चलन से जो तुम्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ, तुम्हारा छुटकारा सोने या चांदी जैसी नाशवान वस्तुओं से नहीं, (19)परन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेमने, अर्थात् मसीह के **बहुमूल्य लहू** के द्वारा हुआ है।
- यूहन्ना के द्वारा उसे **महिमा में देखना** : प्रकाशितवाक्य 5:5–14: देख, यहूदा के कुल का वह **सिंह** जो दाऊद का मूल है, विजयी हुआ है, कि इस पुस्तक को और उसकी सात मुहरों को खोले। (6) और मैंने सिंहासन और उन प्राचीनों के बीच में, चारों प्राणियों सहित, मानो एक बली किया

हुआ **मेमना** खड़ा देखा। ... (7) उसने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली। (8) जब उसने पुस्तक ले ली तो वे चार प्राणी और चौबीस प्राचीन उस **मेमने** के सामने गिर पड़े। उनमें से प्रत्येक के हाथ में वींणा और धूप से भरे सोने के कटोरे थे, जो पवित्र लोगों की **प्रार्थनाएं** हैं। (9) और उन्होंने यह नया गीत गाया: "तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि **तू ने वध होकर अपने लहू** से प्रत्येक कुल, भाषा, लोग और जाति में से **परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।** (10) और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।" (11) फिर मैंने देखा, तो सिंहासन, प्राणियों और प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी संख्या लाखों और करोड़ों में थी, (12) और वे ऊंची आवाज़ से कह रहे थे, "वध किया हुआ **मेमना** सामर्थ्य, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के योग्य है।" (13) फिर मैंने सब सृजी हुई वस्तुओं को जो स्वर्ग में पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे और समुद्र में हैं, अर्थात् उनमें की सब वस्तुओं को यह कहते सुना, "जो सिंहासन पर बैठा है उसका, और **मेमने** का धन्यवाद और आदर, महिमा तथा राज्य युगानुयुग रहे।" (14) और चारों प्राणी "आमीन" कहते रहे, तथा प्राचीनों ने दण्डवत करके उपासना की।

आइए हम फसह का पर्व के आरम्भ होने के समय की कुछ महत्वपूर्ण बातों को देखें।

निर्गमन 12:1-2 तब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, (2)"**यह महीना तुम्हारे लिए आरम्भ का महीना हो**; यह तुम्हारे लिए वर्ष का प्रथम महीना ठहरे।

- यह बहुत महत्वपूर्ण था। सब कुछ यहीं से आरंभ हुआ।
- आपका फसह – जब सबसे पहले आपने परमेश्वर के मेमने, यीशु मसीह को ग्रहण किया – वह आपके भी **महीनों का आरंभ** था। पहली बार आप **जीवित किए** गए। उस समय तक आप **मरे हुए** थे।

  इफिसियों 2:1-5 तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण **मरे** हुए थे, ... (4) परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस महान् प्रेम के कारण जिस से उसने हमसे प्रेम किया, (5) ... उसने हमें मसीह के साथ **जीवत किया** (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।

निर्गमन 12:3 इस्राएल की समस्त मण्डली से कहना कि इस महीने के दसवें दिन तुम में से प्रत्येक जन अपने **पूर्वजों** के घरानों के अनुसार **घर पीछे एक एक मेमना ले**।

- "**प्रत्येक जन** को मेमना लेना है", इसलिए कि आपके पूर्वजों ने मेमना लिया आपके उद्धार के पर्याप्त नहीं है।

- **घरानों के अनुसार घर पीछे एक एक मेमना ले** – हमारे स्वर्गीय पिता ने **अपने घराने** के लिए उस मेमने को दे दिया। **एक पारिवारिक घटना**

निर्गमन 12:21-22 तब मूसा ने इस्राएल के सब **पुरनियों** को बुलाया और **उनसे कहा**, "जाओ और **तुम अपने अपने घराने के अनुसार एक एक मेमना अलग कर रखो,** और यह फसह का मेमना वध करना। 22 और तुम जूफे का एक गुच्छा लेना और उसे तसले में के लहू से कुछ दरवाज़े की चौखट के ऊपर तथा दोनों अलंगों पर लगा देना …

- हमारे स्वर्गीय पिता ने **अपने घराने** के लिए मेमना दिया और **वह** हर उस व्यक्ति पर उस समय **उसका लहू लगाता है** जब वे विश्वास करते हैं।

निर्गमन 12:6 … तब इस्राएल की मण्डली के सब लोग गोधूलि के समय उसे वध करें।

- उसकी मृत्यु में हर एक जन शामिल है। हमें अपने छुटकारे के लिए दिए गए मूल्य को समझना और उस पर ध्यान देना चाहिए।

निर्गमन 12:13 और जिन **घरों** में तुम रहते हो उन पर वह लहू तुम्हारे निमित्त चिह्न ठहरेगा, **और मैं उस लहू को देखकर तुम्हें छोड़ता जाऊंगा,** और जब मैं मिस्र देश को मारूंगा तो वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और न ही तुम नाश होगे।

- परमेश्वर लहू को खोज रहा है। परमेश्वर उन लोगों को खोज रहा है जिन्होंने क्षमा और उद्धार की ज़रूरत को समझते हुए उस बलिदानी मेमने को और उसके लहू को जो उनके लिए उंडेला गया, ग्रहण किया।
- और पद 23 **जब मैं लहू लगा हुआ देखूंगा तो मैं वहां उस घर को छोड़कर आगे निकल जाऊँगा** (अक्षरशः मंडराना) और नाश करने वाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिए **जाने न दूँगा**।

धन्यवाद हो पिता! धन्यवाद यीशु!

यही बात दाऊद ने भी भजन 91:1-4 में कही जो परमप्रधान की शरण में वास करता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। (2) मैं यहोवा के विषय कहूँगा, "वह मेरा शरणस्थान और मेरा दृढ़ गढ़ है, वह मेरा परमेश्वर है जिस पर मैं भरोसा रखता हूं।" (3) क्योंकि वही तुझे बहेलिए के जाल से और महामारी से बचाता है। (4) वह अपने पंखों से तुझे ढांप लेगा, और उसके परों तले तू शरण लेगा, उसकी सच्चाई ढाल और झिलम है। देखें : व्यवस्थाविवरण 32:11

- इस प्रकार की सुरक्षा के लिए आपको उसके पंखों की छाया में वास करना, रहना होगा।
- उसकी आज्ञा न मानने का अर्थ उसकी छाया से निकल जाना।

लूका 22:16 में आगे मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक यह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो जाए, मैं इसे फिर कभी नहीं खाऊँगा।" (17) प्याला लेकर जब उसने धन्यवाद दिया तो कहा, "इसे लो और आपस में बांटो, (18) क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आ जाए, मैं दाखरस नहीं पीऊँगा।"

- यीशु अब उस दिन की राह देख रहा है जब राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर साक्षी हो, और तब अन्त आ जाएगा।

(मत्ती 24:14)

- **वह हमारे** काम, हमें सौंपा हुआ काम समाप्त करने की **प्रतीक्षा में है**, और तब हम परमेश्वर के राज्य में उसके साथ मेज़ पर बैठेंगे और इस वाचा के भोज के साथ शामिल होंगे।

इस भोज को **"मेमने के विवाह का भोज"** कहा जाएगा।

प्रकाशितवाक्य 19:7-9 आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि **मेम्ने** का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने **अपने आप को तैयार कर लिया है।** उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार (जिम्मेवारी) दिया गया" क्योंकि उस महीन मलमल अर्थ **पवित्र लोगों के धर्म के काम** है। तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिख, कि धन्य **वे** हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में **बुलाए गए** हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

लूका 22:19 फिर रोटी लेकर जब उसने धन्यवाद दिया तो उसे तोड़कर उनको दिया और कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है; मेरी स्मृति में ऐसा ही किया करो।"

उनकी संस्कृति में रोटी को तोड़ना वाचा के भोज को दर्शाता है :

यह दूसरा कारण है कि क्यों यीशु को दुख:भोग से पूर्व अपने शिष्यों के साथ फसह खाने की बड़ी लालसा थी। तथा क्यों वह हमारे साथ परमेश्वर के राज्य में खाने की लालसा रखता है। उस समय जब उसके परिवार के सब लोग वहां इकट्ठा होंगे।

बाइबल और संसार के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, कि जब दलों में **सहमति हो** जाती है तो वे मिलकर **भोजन में हिस्सा लेते** हैं।

वाचा का भोज एक दूसरे के प्रति जिम्मेवारियों के साथ उनसे शांति के सम्बन्ध पर **मुहर लगाता** है।

- **उत्पत्ति 31:43-55** में याकूब और लाबान हमें वाचा के भोज का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिसके कारण दो विरोधी दलों में **मेल** हो जाता है।

मैं यरूशलेम के पुराने शहर की **दुकान में** जिसका मालिक एक मुसलमान **था**, मिलने के लिए गया। मैने उसे बताया कि उनकी रोटी मुझे कितनी पसन्द है। उसने अपने बेटे को भेज कर रोटी मंगवा ली और मुझे दे दी।

मैं उसका बहुत शुक्रगुज़ार हुआ और उसे भी उसमें से रोटी लेने को कहा परन्तु उसने दृढ़तापूर्वक मना कर दिया। बाद में मुझे पता चला कि जिसे वे काफिर समझते हैं उसके साथ वे कभी भी रोटी तोड़कर मेल की वाचा स्थापित नहीं कर सकते।

- मध्य पूर्व के लोग "रोटी तोड़ने" की वाचा को हम से बेहतर समझते हैं।

देखें **उत्पत्ति 14:18-20** मलिकिसिदक/अब्राम **43:22** यूसुफ का परिवार/मिस्री लोग

डैरेक प्रिंस एक सत्य घटना के विषय में बताते हैं जो **1948** में घटी जब इस्राएल राष्ट्र अस्तित्व आया था और उस समय इस्राएल के आस–पास मुसलमानों और यहुदियों के बीच लड़ाई छिड़ गई थी।

(इस सत्य घटना को हम "ओ यरूशलेम" नामक किताब के अध्याय 29 में देख सकते हैं।)

एक यहूदी पुनर्वास इलाके पर **जोर्डन** की सेना ने आक्रमण किया तथा उसे पूर्ण रीति से नष्ट कर दिया। केवल कुछ यहूदियों को बन्दी बनाया गया। उन में से एक जवान यहूदी स्त्री "एलीसा" थी। मुस्लिम सैनिक उसके साथ बलात्कार करने वाले थे। जैसे ही वे उसके कपड़ों को फाड़ने के लिए बढ़े कुछ अजीब सी बात हुई। एक अरब अफसर आया और उसने दो सैनिकों को गोली से मार गिराया, फिर उसने अपनी जेब से रोटी का एक टुकड़ा निकाला और इस यहूदी स्त्री को दिया और कहा, "इसे खाओ।" जब उसने रोटी खा ली, तो उसने कहा, "अब तुम मेरी सुरक्षा में हो। कोई तुम्हें नुक्सान नहीं पहुंचाएगा।"

ऐसा क्यों? उसने उसकी रोटी खाई जिसके द्वारा उसने उसके साथ वाचा का स्पष्ट सम्बन्ध को स्थापित किया। युद्ध और वासना की तीव्रता में भी उन मुसलमान सैनिकों ने उस वाचा के सम्बन्ध का और उस जवान यहूदी स्त्री का आदर किया।

एक बार जब उस अफसर और स्त्री के बीच में **रोटी तोड़ी गई**, वे सब उस पवित्र वाचा के द्वारा कर्तव्य बद्ध हो गए।

वे **जानते थे** कि इसका क्या अर्थ है

- उसको कोई हानि या नुकसान न पहुंचाएगा
- परन्तु रोटी तोड़ने के द्वारा स्थापित उस नए सम्बन्ध का आदर करें और उसकी रक्षा करें
- **हमें एक दूसरे समझना चाहिए** और एक दूसरे के प्रति तथा उस मेमने यीशु मसीह के प्रति **निष्ठावान** रहना चाहिए।

वाचा के भोज का हमारे एक दूसरे के साथ परस्पर सम्बन्धों में क्या अर्थ है?

- वचनबद्धता – एक दूसरे की सफलता और समृद्धि के लिए

फिलिप्पियों 2:3-4 नम्रतापूर्वक अपनी अपेक्षा **दूसरों** को **उत्तम समझो।** तुम में से प्रत्येक अपना ही नहीं, परन्तु दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

- निष्ठा – परिस्थितियों या भावनाओं, विवादों अथवा हानियों के बावजूद

- किसी भी प्रकार के आक्रमण से – सुरक्षा, या रक्षा करना
- एक दूसरे को कोई हानि न पहुंचाना, चाहे शारीरिक हो या मौखिक
- एक दूसरे के लिए देना। आरम्भिक कलीसिया ने इस "रोटी तोड़ने" की वाचा की वचनबद्धता को समझा। **प्रेरितों के काम 2:41-47; 4:32 - 5:11**

यह सब भोज की वाचा/ रोटी तोड़ने और सहभागिता के कारण है।

हमें अपनी वाचा के सम्बन्ध को हलके से **नहीं लेना चाहिए** :

- परमेश्वर के साथ हमारी वाचा
- एक दूसरे के साथ हमारी वाचा

  मलाकी 2:10 क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम को उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक दूसरे से विश्वासघात करके अपने पूर्वजों की **वाचा को तोड़** देते हैं?
- हमारे विवाह की वाचा

  मलाकी 2:14-16 यहोवा तेरे और तेरी उस जवानी की संगिनी और ब्याही हुई स्त्री के बीच साक्षी हुआ था जिससे तू ने विश्वासघात किया है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो, और तुम में से कोई **अपनी जवानी की स्त्री से विश्वासघात** न करे। क्योंकि मैं तलाक से घृणा करता हूं," इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का यही वचन है।

- यीशु ने रोटी तोड़ी – उसने इस वाचा को हमारे साथ स्थापित किया – उसने अपनी देह को तोड़े जाने के लिए दी।

  यूहन्ना 10:18 कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ।

- **यह मेरी देह है।** जब हम रोटी को तोड़ते या उसमें से एक टुकड़ा लेते हैं :
  - तो हम यह मानते हैं : "**मेरे पापों** के कारण उसकी देह को तोड़ा गया।"
  - हम उसके साथ बंधी अपनी **वाचा** को स्मरण करते और उसे स्वीकारते हैं।
  - बहुत से लोग जिन्होंने उसे छुआ, वे चंगे हुए हैं। जिस रोटी को हम लेते हैं वह हमारी देह के प्रत्येक सैल को छूकर उसमें शक्ति, जीवन और चंगाई प्रदान कर देगी।

  यूहन्ना 6:35 यीशु ने उनसे कहा, **"जीवन की रोटी मैं हूँ**: जो मेरे पास **आता** है, भूखा न होगा, और वह जो मुझे पर **विश्वास करता है**, कभी प्यासा न होगा।

➢ वाचा की प्रतिज्ञा

यूहन्ना 6:51 **जीवित रोटी** जो स्वर्ग से उतरी, **मैं हूँ**। **यदि कोई** इस रोटी में से खाए तो वह **सर्वदा जीएगा** (वाचा की प्रतिज्ञा), और जो **रोटी** मैं जगत के **जीवन** के लिए दूँगा वह **मेरा मांस है**।"

लूका 22:20 जब वे खा चुके तो उसी प्रकार **उसने प्याला लेकर** कहा, "यह प्याला जो **तुम्हारे लिए** उण्डेला गया है **मेरे लहू में एक नई वाचा है**।

विश्वासीयों के लिए, यीशु मसीह ने पुराने नियम के फसह पर्व के भोज को नए नियम के सहभागिता भोज में बदल दिया। उसने मेमनों के लहू के स्थान पर स्वयं अपना लहू रखा है।

लहू की वाचा, रोटी की वाचा के मुकाबले काफी विस्तृत है। (यह बात विवाह की वाचा के साथ भी सच है)

मलाकी 2:14 तेरी जीवन-संगिनी और ब्याही हुई पत्नी।

- लहू वाचा के सदस्य **एक** हो जाते हैं। परिवार, एक खून

रोमियों 12:5 **हम** जो बहुत हैं, मसीह में **एक देह** होकर आपस में **एक दूसरे** के अंग हैं।

इफिसियों 3:14-15 मैं इसी कारण उस **पिता** के सामने घुटने टेकता हूँ, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, **हर एक घराने** का **नाम रखा जाता** है,

इब्रानियों 2:11-12 क्योंकि पवित्र करनेवाला और **जो** पवित्र किए जाते हैं, **सब एक ही मूल से हैं**; इसी कारण वह उन्हें **भाई** कहने से नहीं लजाता।

- जो **एक** के साथ होता है वह दूसरे के साथ भी होता है

उसकी मृत्यु हमारी मृत्यु थी : (रोमियों 6:23; 2 कुरि 5:21)

2 कुरिन्थियों 5:14 … **जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए।**

गलातियों 2:20 **मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।** अब **मैं जीवित नहीं रहा**, परन्तु **मसीह मुझ में जीवित है।** **दो एक हैं**

कुलुस्सियों 3:3-4 **क्योंकि तुम तो मर गए** और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। 4 जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, **तब तुम भी उसके साथ** महिमा **सहित प्रगट किए जाओगे।**

उसका पुनरुत्थान हमारा पुनरुत्थान था :

यूहन्ना 14:19 … **इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।**

कुलुस्सियों 2:12-13 और **उसी के साथ** बपतिस्मा में **गाड़े गए** और … **उसके साथ जी भी उठे। उसने तुम्हें भी, … उसके साथ जिलाया,** और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।

इफिसियों 2:4-7 परन्तु परमेश्वर ने … **मसीह के साथ जीवित किया … और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया** और स्वर्गीय **स्थानों में बैठाया**

क्योंकि हम "उस में" "उसके साथ एक" हैं : इसलिए यह

पूर्ण, एक समाप्त कार्य है।

- वह जो एक का है – वह दूसरे का भी है

  रोमियों 8 : 16-17 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि **हम परमेश्वर की सन्तान हैं;** 17 और यदि सन्तान हैं तो **वारिस भी**, वरन् **परमेश्वर के वारिस** और **मसीह के संगी वारिस हैं**

- यह एक विश्वासयोग्य, स्थिर, सदा और अनंत वाचा है।

  इब्रानियों 9:12 … **स्वयं अपने लहू द्वारा सदा के लिए एक ही बार** पवित्र स्थान में प्रवेश कर के **अनन्त छुटकारा** प्राप्त किया।

  इब्रानियों 9:15 और इसी कारण **वह नई वाचा का मध्यस्थ है**, जिससे कि उस मृत्यु के द्वारा जो प्रथम वाचा के अन्तर्गत किए गए अपराधों का मूल्य चुकाने के लिए हुई, **वे जो बुलाए गए हैं अनन्त उत्तराधिकार** की प्रतिज्ञा को प्राप्त कर सकें।

विवाह की वाचा भी एक होने की विश्वासयोग्य, स्थिर, सदा की वाचा है

विवाह की वाचा : **दो एक हैं**

इफिसियों 5:25, 28-31

मत्ती 19:6 अतः वे अब दो नहीं, परन्तु **एक** तन हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।"

हम सब एक हैं

1 कुरिन्थियों 10:16-17 वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या **मसीह के लहू की सहभागिता नहीं?** वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह **मसीह की देह की सहभागिता नहीं?** इसलिये कि एक ही रोटी है तो **हम भी जो बहुत है, एक देह हैं :** क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।

यीशु की प्रार्थना :

यूहन्ना 17:20-23 मैं प्रार्थना करता हूँ ... 21कि **वे सब एक हों;** जैसा तू हे **पिता मुझ में है,** और **मैं तुझ में हूँ,** वैसे ही **वे** भी **हम में** हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। 22 वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि **वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं,** 23 **मैं उन में और तू मुझ में** कि वे सिद्ध होकर **एक हो जाएँ,** और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।

यीशु की प्रार्थना का उत्तर नई वाचा के उसके लहू में मिला और उसमें वह प्रार्थना पूर्ण हुई।

(19) **मेरे स्मरण** के लिये यही किया करो। **वाचा के भोज** का केंद्र **यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य को स्मरण करने और उसकी लहू की वाचा पर है जिसमें हमने उसके साथ प्रवेश किया है।**

उसका लहू हमें धर्मी ठहराता है :

रोमियों 5:9 **अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे,** तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न **बचेंगे?**

- उसका लहू हमें छुड़ाता है

इब्रानियों 9:12 ...**अपने ही लहू** के द्वारा, एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और **अनन्त छुटकारा** प्राप्त किया।

- उसके लहू ने हमें क्षमा किया है:

इब्रानियों 10:17-19 **मैं** उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को **फिर कभी स्मरण न करूँगा।** और जब इनकी **क्षमा हो गई है,** ... हमें **यीशु के लहू** के द्वारा

- उसका लहू हमें शुद्ध करता है

1 यूहन्ना 1:7 **यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।**

- उसके लहू ने हमारा मेल कराया है

कुलुस्सियों 1:22 उसने **अब** उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा **तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि** तुम्हें अपने सम्मुख **पवित्र** और **निष्कलंक,** और **निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।**

- यीशु मसीह का लहू हमें शुद्ध करता और पवित्र बनाता है

इब्रानियों 13:12 इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को **अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने** के लिये फाटक के बाहर दुःख उठाया।

यह सब

परमेश्वर के मेमने

यीशु मसीह के लहू

और हमारे साथ उसकी वाचा के कारण है।

रोटी (जो उसकी देह को दर्शाती है) और अंगूर के रस (जो उसके लहू को दर्शाती है) में सहभागी होने से पहले ... सोचें ... आपके लिए प्रभु की वचनबद्धता पर ... और आपकी उसके और एक दूसरे के प्रति निष्ठावान होने की वचनबद्धता पर .... और उसके अर्थ पर विचार करें।

यदि हमारा परमेश्वर के साथ मेल नहीं है और यदि हम प्रभु या एक दूसरे के साथ (अपनी पत्नी) एक नहीं है, **तो हमने अपनी वाचा का उल्लंघन किया है।**

- ❖ हम अपने जीवन में परेशानियों को बुलाते हैं और उन्हें लाते हैं (शत्रुओं को भीतर आने देते हैं)
- ❖ और इसके कई बार गंभीर परिणाम भी होते है।

पौलुस ने यही बात सांसारिक कलीसिया को पत्री लिखते समय की :

1 कुरिन्थियों 3:1-4 हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे **शारीरिक** लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। (2) मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो, (3) क्योंकि अब तक **शारीरिक** हो। इसलिये कि जब तुम में **डाह** और **झगड़ा** है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?

- वे एक, अर्थात एक मन नहीं थे। **याकूब 3:16** क्योंकि जहाँ **डाह** और **विरोध होता है**, वहाँ **बखेड़ा** और हर प्रकार का **दुष्कर्म** भी होता है।

1 कुरिन्थियों 10 में पौलुस फसह की लहू की वाचा के बाद के इस्राएल के **अनुभव** – जिसमें उन्होंने वाचा का निरादर किया - उसके परिणामों की तुलना हमारी नई वाचा से करता है, **और हम सब को उसके परिणामों की चेतावनी देता है।**

1 कुरिन्थियों 10 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए; (2) और सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया; (3) और सब ने एक ही आत्मिक भोजन **किया**; (4) और सब ने एक ही आत्मिक जल **पीया**, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। (5) परन्तु परमेश्वर उनमें से **बहुतों से प्रसन्न न हुआ**, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए।

(6) **ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं**, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम **बुरी वस्तुओं का** लालच न करें;

(गिनती 11 मन्ना के बारे में कुड़कुड़ा रहे थे और मिस्र में जो खाना खाते थे उसके लिए रो रहे थे)

(7) और न तुम **मूर्तिपूजक** बनो, जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, "लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।" (निर्गमन 32:4,6)

(8) और न हम **व्यभिचार** करें, जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में **तेईस हजार मर गये।** (यह हमारे लिए एक उदाहरण है – परमेश्वर प्रसन्न नहीं था)

(9) और न हम प्रभु को **परखें**, जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के द्वारा **नष्ट** किए गए। (गिनती 21) (हमारे लिए एक उदाहरण – परमेश्वर प्रसन्न नहीं था)

(10) और न तुम **कुड़कुड़ाओ**, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा **नष्ट** किए गए। (गिनती 16:41; 17:5,10)

हमारे लिए एक उदाहरण – परमेश्वर प्रसन्न नहीं था

- ये पाप "*मृत्यु में ले जाने वाले*" थे, शारीरिक मृत्यु के, **न** कि अनंत मृत्यु के, क्योंकि वे मेमने के लहू की वाचा में बंधे थे।
- उन्हें **त्यागा नहीं** था, परमेश्वर केवल उनसे ***"प्रसन्न नहीं था"***।

(11) परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, **दृष्टान्त** की रीति पर थीं; और वे **हमारी चेतावनी** के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं। (16) वह **धन्यवाद का कटोरा**, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के **लहू की सहभागिता नहीं?** वह **रोटी** जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह **मसीह की देह की सहभागिता नहीं?** (17) इसलिये कि **एक ही रोटी** है तो हम भी जो बहुत है, **एक देह** हैं : क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। (18) जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखो : क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं?

- इस रोटी को खाने और इस कटोरे में से पीने के द्वारा हम यीशु मसीह की वेदी, उसके बलिदान, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान में सहभागी होते हैं।

पौलुस अगले अध्याय में इसी विषय को जारी रखता है।

1 कुरिन्थियों 11:23-30

क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुँची, और मैं ने तुम्हें भी पहुँचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, **रोटी** ली, (24) और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है : मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" (25) इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू में **नई वाचा** है : जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" (26) क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।

इसके बाद पौलुस वाचा की गंभीरता और उसके परिणामों को बताता है :

(27) इसलिये **जो कोई अनुचित रीति से** प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की **देह** (हम उसकी देह हैं) **और** लहू (वाचा) का अपराधी ठहरेगा। (28) **इसलिये मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।** (29) क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की **देह** (एक दूसरे को) को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने (बिना एक मन और एकता के) से अपने ऊपर **दण्ड** लाता है। (30) इसी कारण तुम में बहुत से **निर्बल** और **रोगी** हैं, और बहुत से **सो (मर)** भी गए।

- बहुत से अनुवादों में *"सो गए"* लिखा है जिसका अर्थ असमय मृत्यु से है। यह एक सजीव चित्रण देता है कि वाचा का भोज क्या है।

  (सो गए का अर्थ मरने से है, देखें :यूहन्ना 11:11-14; 1 कुरिन्थियों 15:51)
- कमजोरी, बीमारी और मृत्यु के कई कारण हो सकते हैं लेकिन यह एक महत्वपूर्ण है, और इससे बचा जा सकता है।

आज के अनेक मसीहियों की तुलना में कई तरह से उन मुसलिम सिपाहियों को "रोटी तोड़ने" की ज्यादा समझ थी।

यह उस वाचा का **स्मारक** है जिसका आरम्भ यीशु ने किया

- यह न सिर्फ **उसकी ओर** हमारे वाचा के कर्तव्यों को **स्मरण दिलाता है** बल्कि **एक दूसरे** की ओर भी
- और पौलुस हमें स्मरण दिलाता है कि हमें देह को ठीक रीति से जांचना और पहचानना है। इसका मतलब हमें यह समझना है कि हमारे भाई और बहनें एक ही देह के सदस्य हैं, हम एक है – एक मन। हम सब एक साथ वचन में बंधे हैं।
- इसका यह अर्थ है कि जिस क्षण से हम इस सम्बन्ध में प्रवेश करते हैं और उसे इस वाचा के भोज में भागी होने के द्वारा नया करते हैं, **हम एक दूसरे के साथ निष्ठावान रहने की वचनबद्धता से बंध जाते हैं।** यह हमारे विवाह की वाचा में भी ऐसा ही है।

- उन सिपाहियों के समान, जिन्हें अपनी व्यक्तिगत भावनाओं के बावजूद उस यहूदी स्त्री का सम्मान करना था क्योंकि उनके अफसर ने उसके साथ रोटी तोड़ी थी, उसी तरह जब हम रोटी तोड़ते हैं – जब हम वाचा के भोज में शामिल होते हैं - हम भी अपने व्यक्तिगत **दृष्टिकोणों** या **भावनाओं** या **संवेदनाओं** के बावजूद एक दूसरे के प्रति निष्ठावान होने (सुरक्षा, ढांपना, पूर्ति करना) के लिए कर्तव्य बद्ध हो जाते हैं।
- यह विवाह की वाचा के लिए भी सच है।

यूहन्ना 13:18 मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता; जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ; परन्तु यह इसलिये है कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, 'जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई।'

- यहाँ यीशु भजन 41:9 की भविष्यवाणी का ज़िक्र कर रहे हैं : मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था (जिससे मेरा मेल था), **जो मेरी रोटी खाता था** (मेल की वाचा), **उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।**
- मध्य पश्चिम, एशिया और यहूदियों में किसी दूसरे को लात दिखाना, **अपमान** और **तिरस्कार** की निशानी होती है।
- जमीसन, फौस्सेट और ब्राउन ने अपनी कमेंटरी में, और साथ ही कई और धर्म-विज्ञानियों का भी यह मानना है कि **यहूदा** ने प्रभु भोज में, जो "रोटी की वाचा" और फिर जो "लहू की वाचा" है, भाग लिया था।

देखें : लूका 22:14-22

- यहूदा कभी भी सच्चा विश्वासी नहीं था।

यूहन्ना 6:70-71 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैंने **तुम** बारहों को नहीं **चुना**? तौभी तुम में से **एक व्यक्ति शैतान है**।" 71 यह उसने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा था, क्योंकि वही जो बारहों में से एक था, उसे पकड़वाने को था।

यूहन्ना 17:12 जब मैं उनके साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की। मैं ने उनकी चौकसी की, और **विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ**, इसलिये कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो।

- हमें ऐसा नहीं करना चाहिए कि हम एक दूसरे के साथ रोटी खाएं और फिर निंदा, झूठी बात करके, किसी भी बुरी या चोटिल करने वाली बात के द्वारा उनके विरुद्ध *"अपनी लात उठाएं"*। हम एक साथ वाचा में हैं। हमें यहूदा के समान काम नहीं करना चाहिए।

- पौलस बताता है कि जब हम वाचा के भोज में शामिल होते हैं तो हमारे पास **दो ही विकल्प** होते हैं।

(1) यदि हम उसे **सही सम्बन्ध** में लेंगे तो वह हमारे लिए **आशिष** और अच्छा **स्वास्थ्य** ले कर आएगा। कृपया **भजन 133** देखें

(2) **लेकिन** अगर हमारे **सम्बन्ध टूटते हैं** तो वह हमारे लिए परेशानियाँ, शायद बीमारी, और कुछ अति वाले मामलों में मृत्यु लेकर आता है।

यह बहुत गंभीर विचार है। लेकिन फिर, वाचा के सम्बन्ध भी बहुत गंभीर और अहम वचनबद्धता के हैं।

प्रभु हमारी सहायता करे कि हम अपने वाचा के संबंधों को हल्के में **न** लें।

प्रभु के साथ/ एक दूसरे के साथ/ अपने विवाह की वाचा

1 कुरिन्थियों 11:31 यदि **हम अपने आप को जाँचते** तो दण्ड न पाते।

- 1 यूहन्ना 1:9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

(32) परन्तु **प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना** करता है, **इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।**

- इसका अर्थ है, हम अपने उस अनंत जीवन को **नहीं** खोएंगे जो प्रभु ने हमें मुफ्त में दिया है। हम अपनी ओर से वाचा का उल्लंघन कर सकते हैं परंतु परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

ताड़ना, हाँ। त्याग देना, नहीं!

लेकिन अगर हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन और देह का आदर नहीं करते तो गंभीर परिणाम होते हैं।

इन बातों पर विचार करें :

मत्ती 5:23-25 इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में **तेरे लिये कुछ विरोध है**, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर **पहले** अपने भाई से **मेल मिलाप कर** और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे, और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए।

मत्ती 18:32-35 तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उस से कहा, 'हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से विनती की, तो मैं ने तेरा वह **पूरा** क़र्ज **क्षमा कर दिया**। इसलिये जैसे मैं ने तुझ पर दया की, **वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना** नहीं चाहिए था?' और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे **दण्ड देनेवालों** के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब क़र्ज भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे। "इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक **अपने भाई को मन से क्षमा** न **करेगा, तो** मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।"

इफिसियों 4:26-27 सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा **क्रोध** न रहे, और **न शैतान को अवसर दो।**

याकूब 5:9 हे भाइयो, **एक दूसरे पर दोष न लगाओ, ताकि तुम दोषी न ठहरो**; देखो, हाकिम द्वार पर खड़ा है।

याकूब 4:11 हे भाइयो, **एक दूसरे की बदनामी न करो ... या** न अपने भाई पर **दोष** लगाओ। व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो एक ही है, ... पर तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है?

1 पतरस 5:8-9 तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस **खोज में रहता है** कि किस को फाड़ खाए। (यह विश्वासी को लिखा गया)

आइए हम अपने आपको जांचें – ऐसे लोगों को अपने मन में लाने की अनुमति अपने विवेक को, पवित्र आत्मा को दें जिन्हें हमारी क्षमा की ज़रूरत है, या जिनके विरुद्ध हमने गलत किया है।

- यदि वह किसी ऐसे को हमारे मन में डालता जिसके विरुद्ध हमें क्रोध या नाराज़गी है – तो अभी यह निर्णय लें कि उन्हें क्षमा करेंगे, चाहे उसने आपको कितनी भी **हानि** पहुंचाई, चाहे उसमें हमारा कितना भी **अहम** या **भावना** या **संवेदना** जुडी है।
- परमेश्वर से प्रार्थना करें और कहें कि **आपने** उन्हें **क्षमा किया है** और पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें कि उसे अपने मन और दिमाग में वास्तविकता बनाएँ।
- यदि कोई भी, या कुछ भी आपके मन में नहीं आत्ता – तो शांति में रहें।

परमेश्वर ने हमारे साथ एक वाचा बनाई है, मेल की सहमति, ऐसी वाचा जो हमारी योग्यता पर आधारित नहीं बल्कि परमेश्वर की भलाई पर आधारित है।

जब हम रोटी खाते हैं, तो मसीह में एकता को प्रदर्शित करते हैं और जब कटोरे में से पीते हैं तो परमेश्वर की क्षमा करनेवाले अनुग्रह को प्रदर्शित करते हैं। आइए हम आनंद से भरकर परमेश्वर की स्तुति करें कि उसने मसीह में हमारा मेल अपने से और एक दूसरे के साथ किया।

इब्रानियों 13:20-23 अब शान्तिदाता परमेश्वर, जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का **महान् रखवाला** है **सनातन वाचा के लहू** के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया, तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।